2

मानवीय आश्यकताएं

हम अपने दैनिक जीवन में देखते हैं कि लोग भिन्न-भिन्न प्रकार की गतिविधियों में संलग्न हैं। उदाहरण के लिये, कुछ लोग कृषिकर्म (खेती) में संलग्न हैं, कुछ कार्यालयों में कार्य करते हैं, कुछ सब्जियाँ बेचते हैं, कुछ के पास विभिन्न प्रकार की दुकाने हैं, कुछ फैक्ट्रियां चला रहे हैं आदि। ये लोग आय के अर्जन के लिये विभिन्न प्रकार की गतिविधियों में संलग्न हैं। उन्हें आय का अर्जन करना पड़ता है, क्योंकि उन्हें अनेक आवश्यकताओं की तुष्टि करनी पड़ती है।

आय के अर्जन के लिये लोग मानव निर्मित अथवा प्राकृतिक संसाधनों का प्रयोग करते हैं। आवश्यकताएं असीमित हैं परन्तु संसाधन सीमित/दुर्लभ हैं।

उद्देश्य

इस पाठ को पढ़ने के बाद आप :

- आवश्यकताओं के अर्थ की व्याख्या कर पायेंगे;
- आवश्यकताओं का उदय तथा उनमें प्रसार कैसे होता है, की व्याख्या कर पायेंगे;
- सभी आवश्यकताओं की तुष्टि नहीं की जा सकती, यह समझ पायेंगे;
- आवश्यकताओं की विशेषताएं बता पायेंगे;
- संसाधन कैसे आवश्यकताओं की तुष्टि करते हैं, जान पायेंगे;
- आर्थिक तथा गैर आर्थिक आवश्यकताओं में भेद कर पायेंगे;
- विकास के साथ-साथ आवश्यकताओं में परिवर्तन और परिवर्धन होता है, व्याख्या कर पायेंगे;
- आवश्यकताओं को सीमित करने के भारतीय दर्शन को समझ पायेंगे।

2.1 आवश्यकताओं का अर्थ

अनेक वस्तुओं की अभिलाषा करना मनुष्य का स्वभाव है। ऐसी अभिलाषाओं की एक अन्तहीन सूची होगी। इन अभिलााषाओं को हम 'इच्छाएं' कह सकते हैं। कोई भी अच्छे मकान, कार,

कम्प्यूटर, अच्छा भोजन, शानदार वस्तु तथा अन्य बहुत सी वस्तुओं की इच्छा कर सकता है। कोई इन सब वस्तुओं को कैसे प्राप्त कर सकता है? कोई इन सभी वस्तुओं को प्राप्त कर सकता है यदि उसके पास पर्याप्त धन हो। यदि किसी के पास पर्याप्त धन नहीं है तो इनमें से केवल एक या दो वस्तुओं अथवा इनमें से कुछ भी नहीं खरीद सकेगा। हमारी कौन सी आवश्यकताएं पूरी होंगी, ये हमारी भुगतान करने की क्षमता अथवा क्रय शक्ति पर निर्भर करता है। यही कारण है कि हमारी सभी आवश्यकताएं पूरी नहीं हो सकती क्योंकि उनकी तुष्टि के लिये हमें धन की आवश्यकता होती है। **केवल वही इच्छाएं जिनकी तुष्टि के लिये हमारे पास पर्याप्त धन हो और जिन पर हम खर्च करने को तत्पर हों, हमारी आवश्यकताएं कहलाती हैं।** एक भिखारी के मन में भी कार की इच्छा हो सकती है परन्तु उसकी इस इच्छा को हम आवश्यकता नहीं कह सकते हैं, क्योंकि उसके पास कार खरीदने के लिये पर्याप्त धन नहीं होता है। परन्तु यदि एक अमीर आदमी कार की इच्छा करे और उस पर धन खर्च करने को तैयार हो तो उसकी यही इच्छा एक आवश्यकता का रूप धारण कर लेती है।

किसी वस्तु या सेवा के लिये इच्छा + क्रय करने के लिये धन तथा क्रय करने की तत्परता

उस वस्तु अथवा सेवा की आवश्यकता

2.2 आवश्यकताओं का उदय तथा प्रसार किस प्रकार होता है?

आवश्यकताएं हमारे जीवन का अंग है। हमारे जीवन के साथ ही वे भी उत्पन्न हो जाती हैं। आदि मानव जंगल में रहने में ही संतुष्ट था, वह सरिताओं का जल पीता था और भूख लगने पर पेड़ों के फल या पशुओं का मांस खा लेता था। उसकी आवश्यकताएं केवल भोजन, आवास और वस्त्रों की आवश्यकताओं तक ही सीमित थीं। हाँ, समय के साथ-साथ इन आवश्यकताओं में अत्यंत वृद्धि हो गयी है। ये कैसे हुआ?

आग की खोज के बाद मानव ने भोजन पकाना आरम्भ कर दिया। फिर तो नई-नई खाद्य सामग्रियां जुटाई जाने लगी। इस प्रकार मनुष्य के स्वाद का प्रसार प्रारंभ हो गया। अब तो आपको अनेक प्रकार के रंग, गंध, आकार के खाद्य पदार्थ सहज ही मिल जाते हैं।

परिधान के मामले में भी पशुओं की खाल लपेटने या बड़े पत्तों से तन ढांकने के प्रयास से हम बहुत आगे निकल कर विभिन्न प्रकार के वस्त्रों की ओर आ गये हैं। अपने जीवन को और बेहतर बनाने के प्रयास में मनुष्य ने नये-नये वस्त्रों की खोज की है। जैसे-जैसे हमारा ज्ञान, इच्छाएं और सौंदर्य बोध विकसित होता है, हम नई-नई सामग्रियों का प्रयोग कर नित नूतन परिधानों की रचना कर रहे हैं।

इसी ढंग से आवास की आवश्यकता में भी आश्चर्यजनक परिवर्तन हुआ है। गुफाओं से चल कर मनुष्य झोंपड़ों के रास्ते चल पक्की ईंटों के बने घरों तक पहुंचा है। आजकल लकड़ी से बने मकान, पक्के मकान, बंगले तथा महलों का प्रयोग हो रहा है, जिनमें सुन्दर सुसज्जित दरवाजे-खिड़कियां और अनेक प्रकार के सौंदर्यवर्धक साज-समान होते हैं।

परन्तु कुछ आवश्यकताएं जीवन के अस्तित्व के लिये आवश्यक होती हैं। उदाहरण के लिये भोजन, वस्त्र तथा आवास। इन्हें **मूलभूत आवश्यकताएं अथवा अनिवार्यताएं** कहते हैं। कुछ अन्य आवश्यकताएं हैं जो हमारे जीवन को सरल तथा सुखमय बनाती हैं। इन्हें **सुविधाएं** कहते हैं। सुविधाओं के उदाहरण हैं कूलर, स्कूटर आदि। कुछ वस्तुएं हमें आनन्द की अनुभूति कराती हैं परन्तु वे अत्यंत कीमती होती हैं। उदाहरण के लिये, विलासी कार, हीरे के आभूषण आदि। इन वस्तुओं को हम **विलासिताएं** कहते हैं।

2.3 आवश्यकताओं की तुष्टि

क्या हमारी सभी आवश्यकताओं की तुष्टि हो जाती हैं? नहीं, जैसे ही एक आवश्यकता की तुष्टि होती है तो दूसरी आवश्यकता उत्पन्न हो जाती है। हमारी आवश्यकताओं में वृद्धि होती है क्योंकि हम बेहतर तथा सुखमय जीवन व्यतीत करने की इच्छा करते हैं। जैसे ही नई वस्तुओं तथा सेवाओं का विकास होता है हमें उनकी आवश्यकता प्रतीत होने लगती है। आवश्यकताओं की तुष्टि वस्तुओं और सेवाओं के द्वारा होती है। वस्तुओं और सेवाओं का उत्पादन संसाधनों की सहायता से किया जा सकता है। **भूमि, श्रम, पूंजी तथा उद्यम को संसाधन कहते हैं**, जो वस्तुओं और सेवाओं के उत्पादन में सहायता करते हैं। आवश्यकताएं अनंत हैं परन्तु उनकी तुष्टि करने वाले संसाधन दुर्लभ हैं। जैसे ही किसी एक आवश्यकता की तुष्टि होती है, दूसरी उत्पन्न हो जाती है। इन आवश्यकताओं में से कुछ की तुष्टि मनुष्य अपनी सीमित आय से कर सकता है, जब कि अन्य की तुष्टि करने में वह समर्थ नहीं हो सकता। इसलिये हमारी सभी आवश्यकताओं की तुष्टि करना संभव नहीं है, यद्यपि एक आवश्यकता की तुष्टि संभव है।

2.4 आवश्यकताओं की विशेषताएं

आवश्यकताओं की प्रमुख विशेषताएं निम्नलिखित हैं :

(i) आवश्यकताएं असीमित हैं

प्रसिद्ध अर्थशास्त्री मार्शल ने सत्य ही कहा है कि मानवीय आवश्यकताएं संख्या में अनंत है और उनके अनेक स्वरूप हैं। एक आवश्यकता पूरी होते ही कोई और आवश्यकता जन्म ले लेती है। आवश्यकताओं का यह अनन्त चक्र जीवन पर्यन्त चलता रहता है। उदाहरण के लिये, जिस व्यक्ति ने कभी पंखा प्रयोग नहीं किया है, वह पंखा पाने के लिये लालायित रहता है। पंखा मिलते ही उसके मन में एयर कूलर, स्कूटर आदि की कामना उत्पन्न हो जाती है। जब इन आवश्यकताओं की तुष्टि हो जाती है तो वह एयर कण्डीशनर, कार आदि अनेक वस्तुओं की कामना करने लगता है। इस प्रकार, हमारी आवश्यकताएं कभी समाप्त नहीं होती।

(ii) किसी एक आवश्यकता की तुष्टि सम्भव है

यदि किसी एक आवश्यकता पर विचार करें, तो उसकी तुष्टि सम्भव होती है। यह ठीक ही कहा गया है कि एक विशेष आवश्यकता की एक सीमा होती है। उदाहरण के लिये, यदि किसी व्यक्ति को प्यास लगी है तो उसे एक, दो या तीन गिलास पानी पीकर बुझाया जा सकता है और उसके पश्चात उस समय उसे पानी पीने का मन नहीं होता।

(iii) कुछ आवश्यकताएं बार-बार अनुभव होती हैं

हमारी अधिकांश आवश्यकताएं हमें बार-बार अनुभव होती रहती हैं। यदि उनकी एक बार तुष्टि हो जाती है, तो वे एक निश्चित समय के बाद फिर उत्पन्न हो जाती हैं। हम खाना खाकर भूख की तुष्टि कर लेते हैं, परन्तु कुछ घण्टे ही बाद हमें फिर भूख सताने लगती है और हमें अपनी भूख की तुष्टि फिर से खाना खाकर करनी पड़ती है। इस प्रकार, भूख, प्यास आदि ऐसी आवश्यकताएं हैं जो बार-बार अनुभव होती हैं।

(iv) आवश्यकताओं की विविधतापूर्ण प्रकृति

आवश्यकताओं में समय, स्थान और व्यक्ति के अनुसार परिवर्तन होते रहते हैं। वे अनेक कारकों जैसे आय, रिवाज, फैशन और विज्ञापन आदि द्वारा भी प्रभावित होती हैं। उदाहरण के लिये, हमें दवाओं की आवश्यकता केवल तब होती है, जब हम बीमार होते हैं। बर्फ की आवश्यकता केवल गर्मियों में ही पड़ती है। श्रीनगर जैसे स्थानों पर तो गर्मी के महीनों में भी ऊनी कपड़ों की आवश्यकता पड़ती है। इसी प्रकार, लोगों की आय में वृद्धि तथा फैशन में परिवर्तन के कारण टी.वी., मोबाइल फोन, कारों आदि अनेक विलासिता की वस्तुओं का उपयोग लगातार बढ़ता जा रहा है। अतः देश के आर्थिक विकास के साथ-साथ आवश्यकताओं में परिवर्तन और वृद्धि होते रहते हैं।

(v) वर्तमान आवश्यकताएं भावी आवश्यकताओं से अधिक महत्वपूर्ण होती हैं

हम अपनी वर्तमान आवश्यकताओं को ही अधिक महत्व देते हैं। व्यक्ति अपने अधिकतर सीमित साधनों को वर्तमान आवश्यकताओं की तुष्टि करने में ही प्रयोग करता है। वह अपनी भविष्य की आवश्यकताओं की इतनी चिंता नहीं करता क्योंकि भविष्य अनिश्चित होता है तथा भविष्य की आवश्यकताएं इतनी आवश्यक नहीं होती। उदाहरण के लिये, वर्तमान में बच्चों की अच्छी शिक्षा की व्यवस्था करना, भविष्य में वृद्धावस्था निर्वाह के लिये धन का संग्रह करने से अधिक महत्वपूर्ण होता है।

(vi) आवश्यकताओं में विकास के साथ परिवर्तन और विस्तार होता है

आवश्यकताओं में परिवर्तन किसा प्रकार हो रहे हैं, इसे प्रदर्शित करने के लिये सबसे अच्छा उदाहरण टेलीफोन है। पहले, ग्रामीण क्षेत्रों में अधिक टेलीफोन नहीं होते थे, परन्तु आज यह अपने सगे सम्बन्धियों से संपर्क बनाये रखने का सभी के लिये आवश्यक साधन बन गया है। जो लोग पहले टेलीफोन का प्रयोग करते थे अब वे मोबाइल फोन का प्रयोग करने लगे हैं। अब उन्हें मोबाइल फोन में भी अधिक सुविधाएं जैसे कि कैमरा, इंटरनेट आदि की आवश्यकता हो रही है।

पाठगत प्रश्न 2.1

1. इच्छा आवश्यकता से किस प्रकार भिन्न होती है?
2. आवश्यकताओं में उदय और प्रसार होता है, इसे प्रदर्शित करने के लिये एक उदाहरण दीजिये।
3. सभी आवश्यकताओं की तुष्टि क्यों संभव नहीं होती?
4. आवश्यकताओं की किन्हीं दो विशेषताओं का उल्लेख कीजिये।
5. कोई इच्छा आवश्यकता कब बन जाती है?

2.5 संसाधन आवश्यकताओं की तुष्टि कैसे करते हैं

जैसा कि हम पहले ही कह चुके हैं, आवश्यकताओं की तुष्टि वस्तु और सेवाओं के द्वारा होती है। इन वस्तुओं और सेवाओं का उत्पादन करने के लिये संसाधनों का प्रयोग किया जाता है। बढ़ती हुई आवश्यकताओं के साथ-साथ हम संसाधनों का भी अधिक प्रयोग कर रहे हैं। संसाधन प्राकृतिक तथा मानव-निर्मित दोनों हो सकते हैं। सारे संसाधनों को भूमि, श्रम, पूंजी तथा उद्यम में वर्गीकृत किया जा सकता है। उदाहरण के लिये गेहूँ के उत्पादन में हम भूमि, श्रम, ट्रैक्टर, पम्पसैट (पूंजी) का प्रयोग करते हैं। कृषक (उद्यमी) गेहूँ का उत्पादन करने के लिये इन सभी साधनों को संगठित करता है। इस प्रक्रिया में वह बीज, खाद तथा उर्वरक आदि का भी प्रयोग करता है। इस प्रकार गेहूँ के उत्पादन में संसाधनों का प्रयोग किया जाता है। इसी प्रकार अन्य सभी वस्तुओं और सेवाओं के उत्पादन में संसाधनों का प्रयोग होता है। क्या आवश्यकताओं की भांति हमारे संसाधन भी असीमित हैं? इसका उत्तर है - नहीं। अपनी आवश्यकताओं की तुष्टि करने के लिये हम जिन संसाधनों का प्रयोग करते हैं वे सीमित/दुर्लभ हैं। विकास के साथ-साथ नई-नई वस्तुओं का अविष्कार होता है, जिससे हमारी आवश्यकताओं में वृद्धि होती है। परन्तु हमारे संसाधन उस अनुपात में नहीं बढ़ते। इससे हमारे संसाधन समाप्त हो सकते हैं।

2.6 आर्थिक तथा गैर-आर्थिक आवश्यकताएं

अब तक हम यह पढ़ चुके हैं कि आवश्यकताएं असीमित होती हैं। उनका स्वरूप प्रत्येक व्यक्ति के लिये अलग हो सकता है। जैसा कि आप जानते हैं कि हमारी अधिकांश आवश्यकताओं की पूर्ति के लिये अनेक वस्तुएं एवं सेवाएं प्रयोग होती हैं। उन वस्तुओं और सेवाओं को हम बाजार से उनकी कीमत चुका कर खरीद लाते हैं। जिन आवश्यकताओं की तुष्टि इस प्रकार की वस्तुओं तथा सेवाओं द्वारा की जाती है, उन्हें **आर्थिक आवश्यकताएं** कहते हैं।

हम अपनी कुछ आवश्यक वस्तुएं बिना बाजार से खरीदारी किये ही प्राप्त कर लेते हैं। ऐसी आवश्यकताएं **गैर-आर्थिक आवश्यकताएं** कहलाती हैं। उदाहरणार्थ, हमें सांस लेने के लिये वायु, खेतों की सिंचाई के लिये वर्षा के जल आदि की आवश्यकता होती है। जब हमें खाना बनाने के लिये नौकरानी चाहिये तो ये हमारी आर्थिक आवश्यकता है। परन्तु, यदि खाना मां बनाती हैं तो ये हमारी गैर-आर्थिक आवश्यकता बन जाती है।

पाठगत प्रश्न 2.2

1. गेहूँ के उत्पादन में प्रयोग किये जाने वाले संसाधनों के नाम लिखो।
2. निम्नलिखित में से किसकी आपूर्ति दुर्लभ है?
   (क) संसाधन (ख) आवश्यकताएं
3. आर्थिक आवश्यकताओं के दो उदाहरण लिखिये।
4. गैर-आर्थिक आवश्यकताओं के दो उदाहरण लिखिये।

2.7 आवश्यकताओं में विकास के साथ परिवर्तन और विस्तार होता है

प्राचीन काल में, मानव भोजन, वस्त्र तथा आवास आदि की साधारण वस्तुओं से संतुष्ट था। परन्तु विकास के साथ-साथ इन आवश्यकताओं की प्रकृति तथा इनकी संख्या में वृद्धि हुई है। हमारे खाने के भोजन की आवश्यकता में परिवर्तन हुआ है। हमें केवल बेहतर तथा पौष्टिक भोजन की ही नहीं, बल्कि भिन्न-भिन्न प्रकार के व्यंजनों की भी आवश्यकता होने लगी है। इसी प्रकार, हम पहनने के लिये केवल एक जोड़ी कपड़ों से ही काम नहीं चलाना चाहते, बल्कि फैशन के अनुसार हमें भिन्न-भिन्न प्रकार के तथा नई-नई डिजाइन के कपड़े चाहिये। हमें आधुनिक सुविधाओं जैसे एयर कन्डीशनर, गीजर आदि से युक्त बेहतर मकान की आवश्यकता है। आप सभी जानते हैं कि बातचीत करने के लिये हमें केवल एक सादा टेलीफोन की ही आवश्यकता नहीं है बल्कि हमें अपने सुविधाओं जैसे कैमरा, इंटरनेट, वीडियों-रिकार्डिंग आदि से युक्त मोबाइल फोन की आवश्यकता है। अतः मनुष्य की लगातार बढ़ती हुई तथा परिवर्तित होती हुई आवश्यकताओं ने अनेक अविष्कारों को जन्म दिया है जिनसे नई-नई और बेहतर वस्तुएं एवं सेवाएं अस्तित्व में आई हैं।

2.8 आवश्कताओं को सीमित करने का भारतीय दर्शन

जैसा कि हम सभी जानते हैं कि हमारी आवश्यकताएं अनंत हैं परन्तु इन आवश्यकताओं की पूर्ति के लिये संसाधन सीमित हैं। इसलिये यदि हम अपनी आवश्यकताओं को असीमित बना लें और लगातार उनमें वृद्धि करते रहें तो हम सीमित संसाधनों में सभी आवश्यकताओं की पूर्ति नहीं कर पायेंगे। इससे बहुत ही असंतोष उत्पन्न हो जाएगा। परन्तु दूसरी ओर, यदि हम अपनी आवश्यकताओं को सीमित कर लें तो हम अपने सीमित संसाधनों से अपनी अधिकतर आवश्यकताओं की तुष्टि कर पायेंगे तथा इससे हमें कहीं अधिक संतोष की अनुभूति होगी। भारतीय विचारकों का सदैव आग्रह रहा है कि **आवश्यकताएं सीमित रखने से ही जीवन में संतोष और सुख की वृद्धि होती है**। इससे हमें एक सुखी जीवन व्यतीत करने में सहायता मिलती है क्योंकि हमें ऐसी आवश्यकताएं जिनकी तुष्टि नहीं हुई है उनके कारण अप्रसन्नता का सामना नहीं करना पड़ता। हमारे राष्ट्रपिता महात्मा गांधी भी सदैव आवश्यकताएं सीमित करने का आग्रह करते थे। उनका कहना था कि तभी हमारा जीवन संतोषमय बनेगा और यह संतोष ही हमें गलत तरीकों से अपनी असीमित आवश्यकताओं को पूरा करने से रोकेगा। कुछ अन्य महान विचारकों ने भी इस प्रकार के विचार व्यक्त किये हैं।

पाठगत प्रश्न 2.3

1. सीमित संसाधनों द्वारा आवश्यकताओं की तुष्टि के सम्बन्ध में भारतीय दर्शन क्या है?
2. आवश्यकताओं में विकास के साथ परिवर्तन और विस्तार होता है, यह सिद्ध करने के लिए संचार प्रणाली का एक उदाहरण दीजिये।

आपने क्या सीखा

- वे इच्छाएं जिनके लिये हमारे पास पर्याप्त धन हो और जिन पर हम खर्च करने को तत्पर हों, आवश्यकताएं कहलाती हैं।
- आवश्यकताओं की तुष्टि वस्तु और सेवाओं द्वारा होती है।
- आर्थिक आवश्यकताओं की तुष्टि उन वस्तुओं और सेवाओं से होती हैं जो बाजार से कीमत चुका कर खरीदी जाती है।
- गैर-आर्थिक आवश्यकताओं की तुष्टि उन वस्तु और सेवाओं से हाती है जो कीमत चुका कर बाजार से नहीं खरीदी जाती।
- नये-नये अविष्कारों के साथ-साथ नई-नई आवश्यकताओं का उदय होता है और उनमें वृद्धि होती है।
- कुछ आवश्यकताएं जीवन के अस्तित्व के लिये आवश्यक होती हैं। इन्हें अनिवर्यताएं कहते हैं।
- ऐसी आवश्यकताएं जो हमारे जीवन को सरल तथा सुखमय बनाती हैं सुविधाएं कहलाती हैं।
- कुछ आवश्यकताएं हमें आनन्द की अनुभूति कराती हैं परन्तु उनकी तुष्टि कीमती वस्तुओं द्वारा होती है, विलासिताएं कहलाती हैं।
- यद्यपि एक आवश्यकता की तुष्टि सम्भव है, संसाधनों की दुर्लभता के कारण सभी आवश्यकताओं की तुष्टि सम्भव नहीं है।
- आवश्यकताओं की कुछ महत्वपूर्ण विशेषताएं हैं :

  आवश्यकताएं असीमित हैं, किसी एक आवश्यकता की तुष्टि सम्भव है, कुछ आवश्यकताएं बार-बार अनुभव होती हैं, आवश्यकताओं में समय, स्थान तथा व्यक्ति के अनुसार परिवर्तन होता है, वर्तमान आवश्यकताएं भावी आवश्यकताओं से अधिक महत्वपूर्ण होती हैं, आवश्यकताओं में विकास के साथ परिवर्तन और विस्तार होता है।
- आवश्यकताओं में विकास के साथ परिवर्तन और विस्तार होता है।
- भारतीय विचारकों का सदैव आग्रह रहा है कि अधिक से अधिक संतोष प्राप्त करने के लिये हम अपनी आवश्यकताओं को सीमित करें।

पाठान्त प्रश्न

1. इच्छाओं को आवश्यकताओं में बदलने के लिये दो उदाहरण दीजिये।
2. आवश्यकताओं का उदय और प्रसार किस प्रकार होता है? एक उदाहरण की सहायता से समझाइये।

3. सभी आवश्यकताओं की तुष्टि सम्भव नहीं है। समझाइये क्यों?
4. आवश्यकताओं की चार मुख्य विशेषताओं का उल्लेख कीजिये।
5. वर्तमान आवश्यकताएं भावी आवश्यकताओं से अधिक महत्वपूर्ण होती हैं, एक उदाहरण द्वारा सिद्ध कीजये।
6. संसाधन आवश्यकताओं की तुष्टि कैसे करते हैं?
7. आर्थिक तथा गैर-आर्थिक आवश्यकताओं में भेद कीजिये।
8. 'आवश्यकताओं में विकास के साथ परिवर्तन और विस्तार होता है' समझाइये।
9. हमें अपनी आवश्यकताओं को सीमित क्यों करना चाहिये?

पाठगत प्रश्नों के उत्तर

पाठगत प्रश्न 2.1

1. वे इच्छाएं जिनकी तुष्टि करने के लिये हमारे पास पर्याप्त मुद्रा हो और हम जिन पर खर्च करने को तत्पर हों, आवश्यकताएं कहलाती हैं।
2. आग की खोज के बाद मानव ने भोजन पकाना आरम्भ कर दिया जिससे नई-नई खाद्य सामग्रियों में वृद्धि हुई।
3. संसाधनों की दुर्लभता के कारण सभी आवश्यकताओं की तुष्टि सम्भव नहीं है।
4. (i) आवश्यकताएं असीमित हैं।
   (ii) कुछ आवश्यकताएं बार-बार अनुभव होती हैं।
5. एक इच्छा आवश्यकता बन जाती है जब उसकी तुष्टि के लिये पर्याप्त मुद्रा हो तथा जिस पर हम खर्च करने को तत्पर हों।

पाठगत प्रश्न 2.2

1. भूमि, श्रम, पूंजी (मशीन), बीज, खाद, उर्वरक आदि
2. (क)
3. (i) पैन (ii) पुस्तक
4. (i) सांस लेने के लिये वायु (ii) खेती के लिये वर्षा का जल